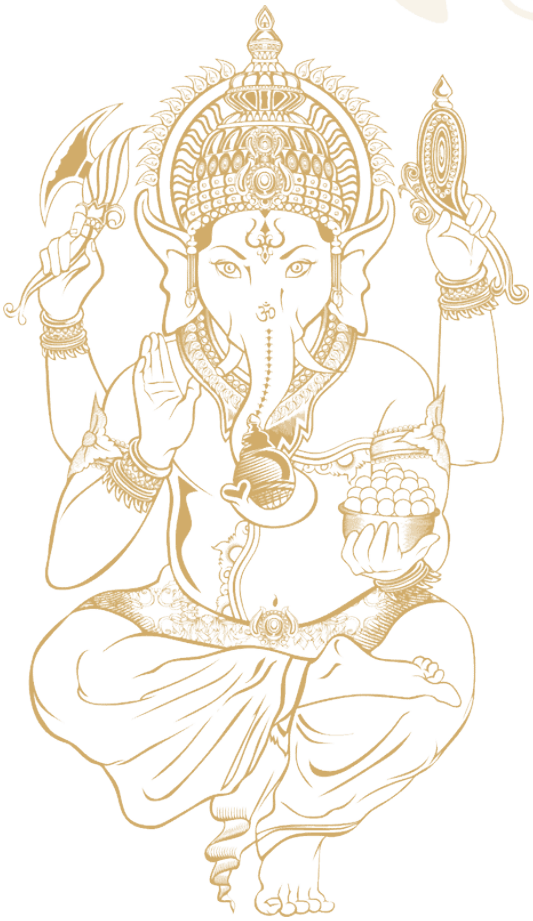

Ggb

11 Apr 2026

10:26 PM

Akola

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121927901**

तिथि 11/04/2026 **समय** 22:26:00 **वार** शनिवार **स्थान** Akola **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:33
अक्षांश 20:40:00 उत्तर **रेखांश** 77:05:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:40 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	11:24:01 घं
वेलान्तर	00:01:05 घं
सूर्योदय	06:06:53 घं
सूर्यास्त	18:38:59 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	9
नक्षत्र	श्रवण
योग	साध्य
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खू-खूबचन्द
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

चन्द्र 6वर्ष 7मा 6दि

चन्द्र

11/04/2026
16/11/2032

	00/00/0000
	00/00/0000
	11/04/2026
गुरु	16/02/2027
शनि	16/09/2028
बुध	16/02/2030
केतु	17/09/2030
शुक्र	18/05/2032
सूर्य	16/11/2032

योगिनी

मंगला 0वर्ष 7मा 28दि

मंगला

11/04/2026
09/12/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	11/04/2026
भद्रिका	09/05/2026
उल्का	09/07/2026
सिद्धा	18/09/2026
संकटा	09/12/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			19:13:34	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	केतु	---	0:00			
सूर्य			27:35:05	मीन	रेवती	4	बुध	गुरु	मित्र राशि	1.32	आत्मा	पितृ	साधक
चंद्र			14:31:58	मक	श्रवण	2	चंद्र	गुरु	सम राशि	1.48	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	07:14:40	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	मित्र राशि	1.37	ज्ञाति	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध			01:07:49	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	नीच राशि	0.93	कलत्र	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			22:24:46	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.06	अमात्य	धन	क्षेम
शुक्र			20:33:41	मेष	भरणी	3	शुक्र	गुरु	सम राशि	1.19	भ्रातृ	कलत्र	मित्र
शनि		अ	12:38:37	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	मंगल	सम राशि	1.20	पुत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु			13:51:22	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु			13:51:22	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

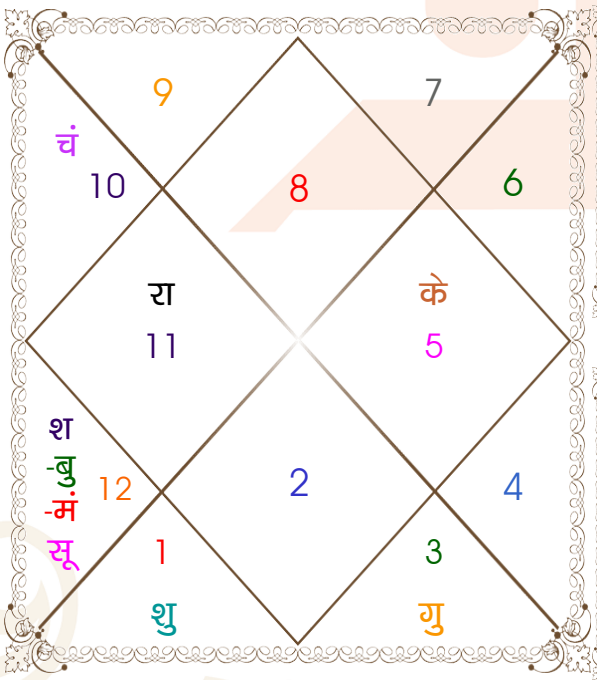

चन्द्र कुंडली

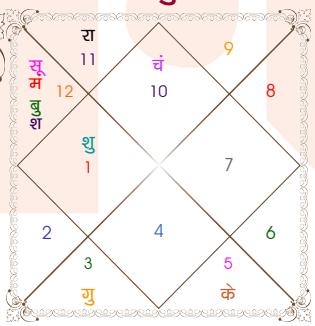

नवमांश कुंडली

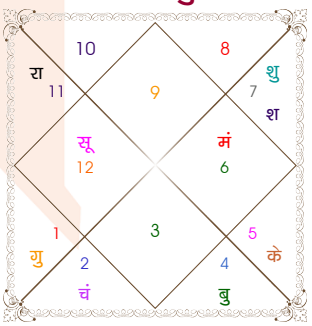

सर्वाष्टकवर्ग

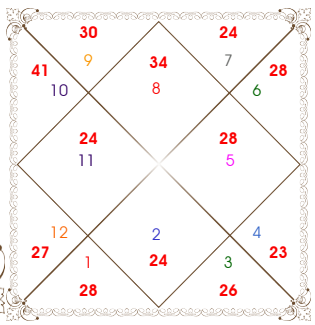

दशमांश कुंडली

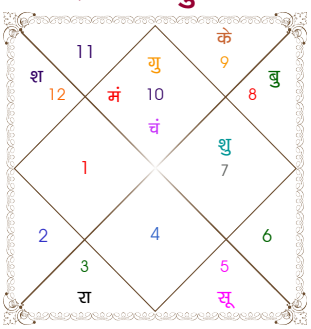

नक्षत्रफल

आप श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्रानुसार आपका गण देव, नाड़ी अन्त्य, योनि वानर, वर्ण वैश्य तथा वर्ग मार्जार होगा। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "खु" या "खू" अक्षर से होगा।

विभिन्न शास्त्रों के अध्ययन में आप अध्ययनशील रहेंगे तथ परिश्रमपूर्वक इनका ज्ञानार्जन करेंगे। आपकी कन्या संतति की अपेक्षा पुत्रों की सख्यां अधिक मात्रा में रहेगी। साथ ही आपका मित्रवर्ग भी विस्तृत होगा एवं बहुत से अन्य लोगों से आपकी मित्रता रहेगी। मित्रों से आपको हमेशा सहयोग की प्राप्ति होगी। भद्रजनों एवं विद्वानों के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा समयानुसार आप उनकी सेवा आदि भी करते रहेंगे। शत्रुवर्ग को परास्त करने में आप हमेशा सफल होंगे एवं वे भी आपसे सर्वदा भयभीत तथा प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त शास्त्रों के श्रवण करने में भी आप हमेशा रूचिशील रहेंगे।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपके मन में विशेष सेवा तथा पूजा का भाव विद्य मान रहेगा तथा जीवन में आप प्रायः अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करते ही रहेंगे। आप विपुल धन के स्वामी होंगे तथा परिश्रम पूर्वक इसका अर्जन करके जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। इसके साथ ही आप अपनी बुद्धि तथा योग्यता के बल पर किसी उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित पद की भी प्राप्ति आप कर सकेंगे। आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा प्रयत्नपूर्वक जीवन में धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करते रहेंगे।

श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।
जातक परिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में सभी लोग आपको हादिक मान सम्मान प्रदान करेंगे अतः आप एक श्री मान व्यक्ति होंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। अतः एक आदरणीय विद्वान के रूप में आपकी ख्याति समाज में दूर दूर तक व्याप्त रहेगी। आप के अर्न्तमन में उदारता या दयालुता की भावना भी नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी तथा दीन दुःखियों एवं अन्य सामजिक कार्यों में आप अपनी इस प्रवृति का नित्य अनुपालन करने के लिए उद्यत रहेंगे।

आप एक भाग्यशाली पुरूष होंगे तथा गुणवती एवं बुद्धिमती पत्नी को प्राप्त करके सांसारिक जीवन में आनन्द की प्राप्ति करेंगे। साथ ही आप एक धनाढ्य व्यक्ति होंगे अतः समस्त भौतिक एवं सांसारिक सुख संसाधनों से युक्त रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

शीमात्रछ्वणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप अन्य व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर हमेशा उसका उपकार स्वीकार करेंगे तथा हार्दिक रूप से उसका आभार भी प्रकट करेंगे। इस प्रकार इस कृतज्ञता के गुण को देखकर अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न दौरान आपकी- साथ सहयोग करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दरता से युक्त रहेगा। अतः अन्य लोग भी आपसे आकर्षित रहेंगे। आपकी सन्ततियां अधिक संख्या में उत्पन्न होगी। साथ ही सर्वप्रकार के सद्गुणों से आप सुशोभित रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।
श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

मकर राशि में जन्म होने के कारण आपका शारीरिक कद लम्बा तथा मस्तक विशालता से युक्त रहेगा। आपका शारीरिक स्वरूप आकर्षक एवं आंखें सुन्दरता से युक्त रहेंगी। आप का शारीरिक बल मध्यम होगा। संगीत के प्रति आपके मन में विशेष सम्मान रहेगा। अतः इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में आप सफलता प्राप्त करेंगे। ठण्ड से आप व्याकुलता का आभास करेंगे तथा इसे सहन करने में आपको कष्टानुभूति होगी। सत्य का अनुपालन करने के

लिए आप आजीवन तत्पर रहेंगे एवं सत्य के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा तथा श्रद्धा का भाव भी प्रदर्शन करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा आदरणीय व्यक्ति माने जाएंगे तथा सभी लोग आपको हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी रहेगी। यदा कदा आप अल्प मात्रा में अन्य जनों के समक्ष क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे। समाज में सभी वर्गो के प्रति आपके मन में स्नेह तथा प्रेम का भाव रहेगा एवं घृणा तथा द्वेष भावना से आप दूर ही रहेंगे। आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले व्यक्तियों से मित्रता के इच्छुक रहेंगे तथा उनसे आपके अधिकांश मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे। आप को काव्य सृजन के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त हो सकेगी क्योंकि आप लेखन कार्य में रूचि रखेंगे। आप में पूर्णोत्साह का भी भाव रहेगा परन्तु भाग्यबल से आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य स्वतः ही अल्प परिश्रम के द्वारा सिद्ध हो जाएगे। आपकी प्रवृति में लोलुपता के भाव की भी प्रधानता रहेगी। अतः कभी कभी आप स्वतः ही अपने लिए अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्घृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने पुत्र तथा पत्नी सहित परिवारिक लालन पालन में प्रायः व्यस्त रहेंगे। साथ ही बाह्य रूप से प्रदर्शन के लिए आप धर्माचरण करने का भी प्रदर्शन अन्य जनों के समक्ष करेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी दूसरे लोगों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत होने वाले होंगे एवं उनके कहे अनुसार ही किसी भी कार्य को करने के लिए उद्यत हो जाएंगे। आप में आलस्य का भाव भी रहेगा अतः अधिकांश समय को इसी में व्यतीत करेंगे। आप एक साहसी एवं निर्भय व्यक्ति भी होंगे एवं दुर्गम स्थानों में जाने तथा कठिन कार्यों को करने के लिए भी सर्वदा उत्सुक एवं उद्यत रहेंगे। यदा कदा आप कठोरता का भी अपने स्वभाव में प्रदर्शन करेंगे। जीवन में वायु से उत्पन्न व्याधियों से आप व्याकुलता की अनुभूति करेंगे तथा कई बार इनसे कष्टानुभूति भी होगी। इसके अतिरिक्त सर्वप्रकार के सत्वगुणों से आप सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में इसका पालन करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने कुल या परिवारिक जनों के मध्य सामान्य सम्मान ही प्राप्त करेंगे परन्तु कुल की रीति एवं मर्यादा को आगे बढ़ाने में नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। स्त्री के आप हमेशा पूर्णरूप से नियंत्रण में रहेंगे तथा सभी महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार या निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। स्वतंत्र निर्णय लेने में आप अपने को असमर्थ सा महसूस करेंगे।

शास्त्रीय ज्ञान को अर्जित करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा समाज में एक ख्याति प्राप्त विद्वान के रूप में जाने जाएंगे। महिला वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय समझे जाएंगे तथा इन सबसे आपको पूर्ण प्रशंसा की प्राप्ति होगी। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में इनके द्वारा पूर्ण सुखोपभोग कर सकेंगे। भाइयों के प्रति भी आपका विशेष स्नेह एवं सहयोग का भाव रहेगा तथा वे भी आपको पूर्ण मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही धन धान्य का आपके पास अभाव नहीं होगा इससे आप प्रायः सम्पन्न ही रहेंगे। आपके अधिकाँश सेवक देखने में सुन्दर तथा गुणवान होंगे एवं ईमानदारी से आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। आप में त्याग की भावना भी रहेगी तथा अवसरानुकूल आप अपनी इस प्रवृति का परिवार या समाज के मध्य प्रदर्शन करते रहेंगे। आप का परिवार भी विशाल होगा एवं सुख प्राप्ति के लिए आप हमेशा चिन्तित रहेंगे तथा इसकी प्राप्ति के लिए भी नित्य यत्नशील रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आप जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी की धन सम्पति को प्राप्त करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। सामाजिक जनों की भलाई के लिए भी आप नित्य कुछ न कुछ कार्य अवश्य करते रहेंगे एवं यथाशक्ति अपना तन मन धन से सहयोग भी अर्पण करेंगे। साथ ही सलाहकार के कार्य में आप अत्यन्त ही दक्ष होंगे। अतः आपकी इस निपुणता का लाभ भी अन्य लोग आपसे उठाते रहेंगे। भाई बन्धुओं का आप पूर्ण रूपेण पालन करते रहेंगे तथा शौर्य गुणों से भी सुशोभित रहकर साहस पूर्वक अपनी सांसारिक समस्याओं का सामना एवं समाधान करेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीत शास्त्र के आप एक प्रसिद्ध विद्वान होंगे एवं इस क्षेत्र के सभी लोग आपको आदर प्रदान करेंगे। साथ ही शारीरिक सुकान्ति एवं लावण्यता से आपका सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व अन्य जनों के लिए आकर्षक रहेगा। काम भावना की आप में अधिकता रहेगी तथा समय समय पर आप इससे व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

देव गण में जन्म होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर तथा श्रेष्ठता से युक्त रहेगी। आपकी बुद्धि में भी सरलता का भाव रहेगा एवं सुगमता से अन्य जनों से भावाभिव्यक्ति करेंगे तथा उनके भावों को भी इसी प्रकार ग्रहण करेंगे। आप को थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही प्रिय लगेगा। अन्य जनों के गुणों के बारे आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा अच्छे बुरे की पहचान करने में भी आप सक्षम रहेंगे तथा स्वयं भी महान विद्वानों द्वारा वणित उत्तम गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप युक्त होंगे एवं जीवन में सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी एवं दानशीलता का भाव स्वाभाविक रूप से आपके मन में विद्यमान रहेगा। अतः जीवन में यथा शक्ति समय के अनुसार आप जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं को दान देने के लिए यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगे। आप की बुद्धि तीव्र रहेगी तथा सादगी पूर्ण जीवन बिताने के लिए भी आप उत्सुक रहेंगे एवं अनावश्यक दिखावे या भौतिकता की उपेक्षा ही करेंगे। इसके अतिरिक्त एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में समाज में आप की प्रतिष्ठा व्याप्त रहेगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आपके अधिकांश कार्य चंचलता से सम्पन्न होंगे तथा प्रवृति में चपलता की प्रवलता रहेगी। मीठे पदार्थो का भक्षण करना आपको अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा तथा यत्नपूर्वक इनके लिए आप लालयित रहेंगे। धन के प्रति आपके मन में लोलुपता का भाव रहेगा तथा इसे प्राप्त करते समय आप अधीरता का प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृति में कलह तथा विवाद होता रहेगा। काम भावना की भी आप में अधिकता रहेगी। आपकी सभी संततियां सद्गुणों से सुसम्पन्न तथा बुद्धिमान होगी। आप एक बहादुर तथा साहसी व्यक्ति भी होंगे एवं समयानुसार इस प्रवृति का प्रदर्शन भी करते रहेंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार

से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, शकुनीकरण, वैधृतियोग, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनिकरण में

कोई भी शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए एवं नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल, चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी योग्य सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में भी वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।